

जाना रे जाना स्पष्ट ने जाना

चे उनमोल खजाना
भरी सभा में फाड़ के सीना

हनुमत का दिव्यवलाना
बैठे राम-राम-राम- बैठे राम-राम-राम

सीता राम-राम-राम- सीता राम-राम-राम
एक समय की बात है कि, हनुमत को भूख सताई
मन में सोचा मँझे सीता की, याद उन्हें जो आई
फिर तो क्या था ॥ ४२ ॥

पल में उड़ कर- पहुँचे उपना रिकाना

भरी सभा में फाड़ के सीना ---
बोले माता भूख लगी है, दया जरावरी दे
भूख मिटाकर प्रभु की सेवा, कैसे करूँ बता दो
माता बोली ॥ ४२ ॥

प्रभु चरणों को कभी न लगात भुलाना

भरी सभा में - - - - -

बोली माता, बैर जरा में, अभी परस के लाई
मोदुक आल लिया हाथों में, और जल्दी से आई
चार से बोली ॥ ५५५५ ॥

भूख मिटाऊ फिर सेवा में जाना
भरी सभा में ॥ ५५५५ ॥

तेज भूख में नेत्र बंद थे, नेत्र खुले तो देखा
नजर पड़ी माथे के ऊपर, थी सेन्दुर की देखा
मोदुक होड़े ॥ ५५५५५५ ॥

और क्रोध में, अग्न रूप हो जाना
भरी सभा में ॥ ५५५५ ॥

बोले सिर में किसने मारा, लगा है कैसे सेन्दुर
नहीं बचेगा दग्नव मुझसे, डूबा हो सात समन्दर
मैया बोली ॥ ५५५५५५ ॥

क्रोध को होड़े, हैं तू अभी उँगना
भरी सभा में ॥ ५५५५ ॥

माता बोली अति पवित्र, होकर केहसे लगाती
माथे की छस रेखा से, स्वामी की आयु बढ़ाती
सब कुदु जगा में ॥ ५५५५ ॥

स्वामी ही है- दूजा नहीं रिकाना
भरी सभा में ॥ ५५५५ ॥

मोदक थाल, ढोड़ के हनुमत, पवन वेग से धाये
धी-ऐन्दुर का, लैप बदन में, करके आति हर्षये.

अजर- अमर हों ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मेरे स्वामी, चाकर मुझे बनाना

भरी सभा में- - - - -

खड़े हुये फिर बीच सभा में, दिल की तपन बुझाने
अपनों ने हूँस, मिल के बोला, किसको आये बताने
हनुमत बोले ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अमर हो जोड़ी- हिरदे में बैठना

भरी सभा में- - - - -

हूँसते- हूँसते बोला विभीषण, आज तुम्हें क्या सूझा
क्या जोड़ी दिल के भीतर है, अट्टाहास कर बूझा
भरी सभा में ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अट्टाहास सुन- अग्न रूप हो जाना

भरी सभा में- - - - -

जैसी बिजली कड़क रही हो, रथामठ धन के बीच
सीना फाड़ खड़े बजरंगी, भरी सभा के बीच
सबने देरवा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सीना भीतर जोड़ी का आज जाना

भरी सभा में- - - - -

देखा सबने उपनी आँख से, और लगे भय सबने
पल में सीता राम विराजे, हनुमत थे अंजामे
लंकपुति को ८८८८८८
श्रीराम से आखिर पड़ा हुक्कना
भरी सभा में ----

द्वोऽ सिंगासन पल में धाये, मेरे अवधि विहारी
अश्वुधार से चरण पखारें, हनुमत औरियाप्यारी
ये दास उपका ५५५५५
जन्म-जन्म से युगल चरण दीवाना
भरी सभा में - - -

रोते-रोते श्रीरामने, हनुमत बोले लगाये
प्रेम मिलन में द्वेनों ने, नयनों से नीर बहावे
हनुमत बोले ॥ ५५५५५ ॥
मेरे स्वामी- मुझको नहीं भगाना
भरी सभा में - - -

थर-थर होंठ लगे कम्पन में, बोल मधुर बैनन में
अविरल गरित से अशुद्धारा, बनी हुई नैन में
चाकर में हूँ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हरिं चरणों का न मुद्दको ढुकरना
भरी सभा में - - -

जो उपकार किये हैं तुमने, नहीं ऊरण हो पाएँ
 तुम समाज नहीं कोई उपकारी, कैसे तुमें भुलाएँ
 यहीं रुकना हनुमत ॥५५५॥

युगल-चरण की द्वोभातू बनजाना

भरी सभा में-—

दृष्टा देख बहनुमत की सीता, मन ही मनघबराई
 मांग भरी देखवी सेन्दुर दे, भूख में दौड़ लगाई
 सोच बड़ा है ॥५५५॥

मेरे लगल का इनको प्रभु उपनाना

भरी सभा में-—

भरी सभा को देख रामने, कुल इतना कहड़ाला
 कहाँ मिले लेंसा उपकारी, आज्ञा का मतवाला
 रेंसे रूप का ॥५५५॥

अर्थ यहीं स्वामी को अमर बनाना

भरी सभा में-—

सीता राम की जोड़ी ने फिर बर हनुको देड़ाला
 अजर-अमर होगा तू जग में, भक्तों का रथवाला
 जब तक दुर्निया ॥५५५॥

बनी रहेगी, रहना अंजनी लगला

भरी सभा में-—

मोदक थाल दूड़ के भागा, अब लक है द भूखा
अश्रुधार बही ऊँचियों से, मर्क सीता ने देखा
चल मोदक खाले ॥५५५५॥

भूख मिटाले- राम भजन में ही रहना
भरी सभा में- - -

जैसा रूप बना है तेरा, लें से ही तुम रहना
प्रभु राम की सेवा में तुम, जीवन उपना देना
अभय चुगल का ॥५५५५॥

साथ रहेगा- मृकत याल कहलाना
भरी सभा में- - -

मंगल के दिन जो भी तुमको, मोदक मोगलगा दे
घी सेन्दुर का देह पे तेरी, चोला हर्ष चढ़ाये
“श्री बाबा श्री” उब ॥५५५५॥

शरण में तेरी- सबके काज बनाना
भरी सभा में- - -

जाना रे जाना ॥५५५५॥ सबने जाना ये उनमोल खजाना
भरी सभा में फाड़ के सीना हनुमत का दिखलाना
बैठे- राम- राम- बैठे- राम- राम- राम-
सीता- राम- राम- राम- सीता- राम- राम- राम-